

# अथर्ववेद (१.३.२)

मन्त्र, पदपाठ, और वैज्ञानिक विश्लेषण

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | सम्पर्क: 8756390767

## मन्त्र तथा पदपाठ

विद्या शरस्य पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम् ।  
तेना ते तन्वे शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति ॥२॥

### पदपाठः

विद्या । शरस्य । पितरम् । मित्रम् । शतवृष्ण्यम् ।  
तेन । ते । तन्वे । शम् । करम् । पृथिव्याम् । ते । निषेचनम् । बहिः । ते । अस्तु । बाल् । इति ॥

## १. शब्दार्थ (Word Meaning)

विद्या (vidma): हम जानते हैं।

शरस्य (śarasya): शर (सरकण्डे या बाण) के।

पितरम् (pitaram): पिता (उत्पादक) को।

मित्रम् (mitram): मित्र देव को (जो दिन के अभिमानी और सबके हितकारी देवता हैं)।

शतवृष्ण्यम् (śatavr̥ṣṇyam): सैकड़ों प्रकार के बल/वीर्य से युक्त।

तेन (tena): उस (मित्र देव या शर) के द्वारा।

ते (te): तुम्हारे (रोगी के)।

तन्वे (tanve): शरीर के लिए।

शम् (śam): शान्ति / कल्याण / सुख।

**करम् (karam):** मैं करता हूँ।

**पृथिव्याम् (pr̥thivyām):** पृथ्वी पर।

**ते (te):** तुम्हारा (रुका हुआ मूत्र)।

**निषेचनम् (niṣecanam):** निःशेष स्राव (पूर्ण रूप से गिरना/निकलना)।

**बहिः (bahih):** शरीर से बाहर।

**ते (te):** तुम्हारे।

**अस्तु (astu):** होवे।

**बाल् इति (bāl iti):** 'बाल्' इस शब्द/ध्वनि के साथ (तरल पदार्थ के वेग से छपाक कर गिरने की ध्वनि)।

## २. सायणाचार्य भाष्य का अनुवाद (Sayana Bhashya Translation)

'दिन के अभिमानी (अधिष्ठाता) देवता 'मित्र' हैं। वे सभी प्राणियों के लिए मित्र के समान हितकारी (भलाई करने वाले) होने के कारण 'मित्र' कहे जाते हैं। तैत्तिरीय संहिता में मित्र का अपना कथन है— 'मैं सबका मित्र हूँ' (तै.सं. ६.४.८.१)। महर्षि यास्क ने निरुक्त में इसकी दूसरी प्रकार से व्याख्या की है— 'मित्र वह है जो प्रमीति (मरण या नाश) से बचाता है' (निरुक्त १०.२१)।

वे (मित्र देव) भी वर्षा के कारण रूप में 'शर' (सरकण्डे नामक वनस्पति) को उत्पन्न करने वाले होने से उसके 'पिता' (उत्पादक) के रूप में कहे गए हैं। श्रुति (वेद) में भी कहा गया है— 'दिन मित्र देवता का है, और रात्रि वरुण देवता की है' (तै.ब्रा. १.७.१०.१-२)। तथा 'दिन और रात के द्वारा ही पर्जन्य (बादल) वर्षा करते हैं; (यजमान) मित्र और वरुण की ही उनके अपने-अपने भाग से उपासना करता है, और वे दोनों ही इसके लिए दिन-रात के द्वारा पर्जन्य (बादल) से वर्षा कराते हैं' (तै.सं. २.४.१०.२)।

मन्त्र के शेष भाग का अर्थ पहले (पूर्व मन्त्र) के समान ही समझना चाहिए।" (अर्थात्, मैं उस शर और मित्र देव के द्वारा तुम्हारे शरीर को रोगमुक्त करता हूँ, तुम्हारा रुका हुआ मूत्र पृथ्वी पर 'बाल' शब्द करता हुआ बाहर गिरे)।

## ३. मन्त्र विनियोग एवं प्रमाण (Viniyoga & Proof)

**विनियोग:** इस मन्त्र (और सम्पूर्ण अथर्ववेद १.३ सूक्त) का विनियोग 'मूत्रकृच्छ्र' (Retention of urine / पेशाब का रुक जाना) तथा मूत्राशय से सम्बन्धित अन्य रोगों की निवृत्ति के लिए किया जाता है।

**प्रमाण (Proof):** शौनक और कौशिक मुनि के 'कौशिक सूत्र' में इसका स्पष्ट प्रमाण मिलता है:

- "विद्वा शरस्येति मूत्रकृच्छ्रिणं पाययति" (कौशिक सूत्र २५.१०)
- "शरनाल्या बस्तिबिलं विवृणोति" (कौशिक सूत्र २५.१४)

**अर्थ:** 'विद्वा शरस्य...' (अथर्ववेद १.३) सूक्त का पाठ करते हुए मूत्रकृच्छ्र (Urinary stricture) के रोगी को भस्म/औषधि मिश्रित जल पिलाना चाहिए। यदि रुकावट अधिक हो, तो 'शर' (सरकण्डे) की चिकनी नाली (नली) बनाकर बस्तिबिल (मूत्रमार्ग) को खोलना चाहिए (यह प्राचीन काल में Catheterisation की शल्य प्रक्रिया का प्रमाण है)।

## ४. व्याकरण एवं व्युत्पत्ति (Grammar Derivation)

- विद्वा:** 'विद् ज्ञाने' (जानना) धातु से लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन। (विद्वा = हम जानते हैं)।
- पितरम्:** 'पा रक्षणे' धातु से 'तृच्' प्रत्यय लगकर 'पितृ' शब्द बनता है। द्वितीया विभक्ति एकवचन। (रक्षक या उत्पादक को)।
- मित्रम्:** 'मिद् स्नेहने' धातु से 'त्र' प्रत्यय (उणादि सूत्र से) अथवा यास्क के अनुसार 'प्रमीते: त्रायते' (मृत्यु से बचाने वाला)।
- शतवृष्ण्यम्:** 'शतं वृष्ण्यानि यस्य सः' (बहुव्रीहि समास)। 'वृष्' धातु से 'वृष्ण्य' (बल/वीर्य/शक्ति) बना है।
- निषेचनम्:** 'नि' उपसर्ग + 'सिच्' (क्षरणे/सींचना) धातु + 'ल्युट्' (अन) प्रत्यय। (निःशेष रूप से साव होना)।
- अस्तु:** 'अस् भुवि' (होना) धातु से लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- बाल् (इति):** यह एक ध्वन्यात्मक (Onomatopoeic) अव्यय है। जैसे पानी के छपाक से गिरने पर आवाज़ होती है, उसे 'बाल्' कहा गया है।

## ५. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

**औषधीय एवं शल्य विज्ञान (Medical/Surgical Science):** आयुर्वेद में 'शर' (Saccharum munja / मुंज घास या सरकण्डा) को 'मूत्रल' (Diuretic) औषधियों में गिना गया है। इसकी जड़ का काढ़ा मूत्रमार्ग की रुकावट को दूर करता है। भौतिक रूप से, प्राचीन चिकित्सक मूत्रमार्ग अवरुद्ध होने पर (Prostate enlargement या पथरी में) शर (सरकण्डे) की एक पतली, चिकनी और खोखली नली बनाकर उसे मूत्रमार्ग में डालते थे जिससे फंसा हुआ मूत्र वेग से बाहर आ जाए। आधुनिक चिकित्सा में इसे Catheterization कहा जाता है। मन्त्र में 'बाल्' शब्द मूत्र के वेग से गिरने की ध्वनि का वैज्ञानिक चित्रण है।

**पारिस्थितिक विज्ञान (Ecological Science):** मन्त्र सूर्य (मित्र) को पृथ्वी की वनस्पतियों (शर) का पिता कहता है। सायण भाष्य में स्पष्ट किया गया है। सूर्य (दिन) के ताप और वाष्पीकरण से ही बादल (पर्जन्य) बनते हैं,

और बादलों की वर्षा से ही 'शर' आदि वनस्पतियाँ जन्म लेती हैं। आधुनिक विज्ञान (Photosynthesis और Water Cycle) भी यही मानता है कि वनस्पतियों का मुख्य उत्पादक सूर्य का प्रकाश और जल है।

**मनो-कायिक चिकित्सा (Psychosomatic Healing):** मन्त्र का अर्थ है— "जैसे सूर्य के प्रभाव से बादल जल को वेग से पृथ्वी पर छोड़ देते हैं, वैसे ही मैं तुम्हारे शरीर में रुके हुए विषैले तत्वों (मूत्र) को प्राकृतिक रूप से पृथ्वी पर छोड़ता हूँ।" प्रकृति के इस नियम (Macrocosm) को शरीर (Microcosm) पर लागू करके रोगी को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ (तन्वे शं करं) करने का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।